

Written by कुमार सौवीर

Wednesday, 13 June 2018 08:26

: 0000 00000 00 00000 00000 0000 00 0000000000000 00 00000 00000 0000 00000 00  
00-00000000,0000000 000000 0000000 :000000 0000000 00 0000000 00 000000 000000  
0000 00 00000000 00,000000 000000000 0000 0000000 :000000000 !000 000000 000?00 000000  
00 0000 00000000000000 00 0000000 00000000 0000 :

000000 000000

00000 : सोचता हूँ कि सुना ही दूँ चंद घटना' शायद आपके कम भी आ जा तो जनाब, यह भले ही ककेरी क्त् पना भले ही हो, लेकिन आपके इससे इस घटना के समझने में मदद मलि सकती है तो कस् सा-केताह यह क शेरनी क अपने सहि-शावकके बीच क अद्भुत प्रेम-नेह संबंध होता था क कदनि मैंने देखा क क शेरनी अपने इक्लौते सहि-शावकके साथ घूम रही थी अचानक क्निहीं वजहों से शेरनी अपने शावकसे थोड़ा दूर हटी, तो कुछ दो-कैड़ी के नीच लकड़बग्घों ने उसके शावक पर हमला कर दिया शावककी चीखें घुटी-घुटी थी, बलिकुल मरणासन्न जैसे उसकी बोटियों नोच रहे हों लकड़बग्घे शेरनी के कुछ समझ नहीं आया मगर उसे अपनी छठी इंद्री से इतना जरूर हसास हो गया क उसके प्राणों से भी प् यारा शावकमुसीबत में है और हमलावरों के चुंगल में है

व्याकुल शेरनी बदहवास हो गई बनि कुछ सोचे समझे उसने अपने शावककी ओर छलांग लगा दी और पहुंच गई अपने शावकके पास, जिसकी बोटियों कुछ दरदई लकड़बग्घे नोच रहे थे शेरनी ने देखा क वह उन लकड़बग्घा से अक्ले मुकबला नहीं कर सकती, लेकिन इसके बावजूद वह टूट पड़ी क लकड़बग्घे पर जो उस शेरनी पर चढ़ा रहा था शेरनी तानकर अपना पंजा नकिला और सीधे उस लकड़बग्घे के चेहरे पर दे मारा शेरनी ने इस हस्तक्षेप से शक्तिरे लकड़बग्घे अपने पछिवाड़े में अपने पूछ दबाकर भाग नक्ले

00000000000000 00 000000 00 000000 00 0000 000000 00000000 000000 00000 00 000000 000000000 :-

0000000 00 0000000000000000

कहानी इससे भी आगे भयावह है। लेकिन पलिहाल, इतना समझ लीजा। कि वह सहि-शावक कोई शेर-बच्चा नहीं था बल्कि 20 बरस का कछात्र था जो अपना भवषिय वधि-जगत में बनाना चाहता था। और अपने इसी संकल्प के तहत उसने देहरादून की पेट्रोलियम यूनविर्सिटी में डमशिन किया था। इस हमले के दौरान उसका यह इस यूनविर्सिटी में तीसरा बरस था। सहि-शावक पर हमला करने वाले लोग लकड़बग्घे नहीं थे, बल्कि शायद उनसे भी क्रूर, नरिमम और अमानवीय जानवरों का झुंड थे जिन्होंने देहरादून के कथाने पर अड्डा जमा लिया था। और आखिरी बात है कि वह शेरनी दरअसल कजीता-जागता इंसान थी। बल्कि इस से भी बेहतर वह कजदि भी थी। ऐसी नैसर्गकिजदि, जिसमें न्याय के प्रति समर्पण की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। और सर्वोच्च बात यह कि वह जदि कमां थी, उसमें भरा मातृत्व थी।

इस शेरनीनुमा मां के सहि-शावकनुमा वधिशिास्त्र के छात्र बच्चे पर देहरादून के लकड़बग्घा पुलिसिवालों ने जतिना अपमान हो सकता था, किया। इस बच्चे को उसके हॉस्टल में घुसकर पीटा गया। उसके किसी को कुख्यात अपराधी की तरह पुलिसि जीप में दूस कर मां-बहन की गाली दी। यह पुलिसिवाले पूरे यूनविर्सिटी में जुलूस नकिलते रहे और आखिर में पुलिसि थाने पर पहुंचकर उसे सरेआम उस बच्चे की मां के सामने मां-बहन-बेटी की अश्लील गालियां देते रहे।

अब आप बताइं कि आप अगर उस समय मां होते और आपका बच्चा कुछ लकड़बग्घों के चंगुल में फंसा होता तो आप क्या करते हैं ? शायद मैं आपको नहीं समझा पा रहा हूं कि उस वक्त्त आप अगर होते तो क्त्त या करते। लेकिन इतना जरूर है कि अगर मैं उस बच्चे की मां की भूमकि में वहां मौजूद होता, तो मैं क्या करता। सुनयिे, मैं बताता हूं आपको, कि मैं अपना पूरा ध्यान अपने बच्चे को बचाने पर लगाता और मेरे बच्चे के हमलावरों से जूझ पड़ता। उस वक्त्त मैं केवल मां होता, जो अपने नैसर्गकिन् याय की भावना से ओतप्रोत होता। जूझ जाता उन लकड़बग्घों से जो हमारे बच्चे की बोटयिों पर नशाना लगा रहे होते, नोंच रहे होते या फिर अपनी लकड़बग्घा स्ट्राइल में उसका मजाक उड़ा रहे होते। मैं अपना पंजा उठाता और तान कर हमलावरों में से किसी न किसी के चेहरे पर रसिद कर देता।

0000000000-0000 00 000000 000000 00 000000 00 0000 000000 000000 000000 000000 000000 :-

Written by कुमार सौवीर

Wednesday, 13 June 2018 08:26

---

[000000 0000 0000](#)

खैर, अब आप बताइं कि ऐसी हालत में अगर आप होते तो क्या करते हैं? अपने क्लेजे के टुकड़े के पटिते-गालियां खाते हुं चुपचाप खड़े रहते या फिर सीधे हस्तक्षेप कर देते। आप भी प्रतरोध पर उतर आये, बना सोचे-बचारे के लकड़बग्घों के झुंड में आप बुरी तरह फंस सकते हैं। लेकिन उस समय आपको अपने नैसर्गिक और प्राकृतिक दायित्व व नभिते, फिर भले ही आपकी जान या प्रतर्षिता अथवा आजीविका चली जाती। आप सब कुछ भूल जाते और सरिफ बच्चे के बचाने में अपना ध्यान देते।

आप बताइं ना, कि आप भी ऐसा ही करते ना?

वेरी गुड। लेकिन ठीक यही दायित्व व तो जया पाठकने भी किया। जया पाठक, यानी उस बच्चे की मां जो अपनी बच्चे के आर्तनाद सुनकर तत्काल मौके

Written by कुमार सौवीर  
Wednesday, 13 June 2018 08:26

पर पहुंच गई और ठीकउसी मौकेपर उसने हमलावर लोगों पर तमाचा जड़ दिया। भले ही उसकेबाद वहां मौजूद उन सारे लकड़बगड़ों के झुंड ने मलिकर उसक तयियां-पांचा कर दिया। लेकिन कम से कम उस मां ने इतना तो जाहरि कर ही दिया कि उसकेलाई अपनी जिदगी बेकर है अगर वह अपने बच्चे की जिदगी नहीं बचा सकती। न यय भी तो यही कहता है न मी लॉर्ड।

अब आखरी सवाल आप मीलार्ड लोगों से। मीलार्ड ! आप क्या है? माना कि आपकेपास कुछ विशेष अधिकर हैं। लेकिन ठीकइसी तरीकेसे विशेष अधिकर तो कमां केपास भी होते है ? यह बात भी छोड़ दीजा। तो सामान् य अधिकर तो उस बच्चे केपास भी थे। खैर, मुझे इतना तो बताइ। क्या सामान् य नागरकिके अपनी बात कहने या बोलने या सुरक्षा करने क कोई अधिकर है या नहीं? आप तो मी लॉर्ड है, पैसला कीजा। न कि जया पाठककी जगह अगर आप उस बच्चे की मां होते, तो आप खुद क्या करते है? आईपीसी की धारा 96, 97 , 98 और उसकेबाद की तत् सम् बन् धी धारा। इसी जमीन पर कयम है मी लॉर्ड। और आपके यह सखाने की जरूरत नहीं है कि कनून किताबों से नहीं, मानवीय व यवहार पर तय होते है। इसीला। बहस होती है, जहां क ओर क्टर कनून होते है, वहीं दूसरी ओर मानवता क समंदर। नषि। तुरता क नाम है कंक्रीट क मकन, जबकि उसमें मानवता, भावुकता और ममत् व-स् नेह बसता है।

तो मी लॉर्ड ! सरिफ कनून मत बांचयि, चो। टहलि मातृ व की पीड़ा देखयि ? आपके छक्केन छूट जा, तो मेरा भी नाम कुमार सौवीर नहीं।

00000 00 0000-00 000 000000 000 0000000000 0000 0000 00 0000000 0000  
00 00000 00 0000000 00000 0000, 00 0000000 00 0000000  
00 00000, 0000000000 00 00 0000000 00 000000000 0000000  
000000000 : 000000000 00 00000 00000 000000000 00, 00000 0000 0000 000000-00000  
0000000000 00000 0000 000000000 000000000 0000 00000 00000  
00000 00 00 00000, 0000 00000 00000 00000 00000 00000 00000 0000 0000000 ?  
0000000 00 00 00000 00 00 0000 0000 ! 00 00000 00 00000 0000000 000000000000 00 0000000 00000 ?  
00 000000, 00000000 0000000000 0000 00 0000000000000 000000-00000000 00 0000000000 0000000  
00 00 00000 : 0000000 0000000, 000000 00 0000000 00 00

000000 00000000 00 00 00000, 0000000 0000000 0000000